कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्यायें: एक अध्ययन

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल की
एम.एड. (आर.आई.ई.) उपाधि की
आंशिक संपूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघुशोध प्रबंध
2008–2009

मार्गदर्शक
डॉ. यू. लक्ष्मीनारायण
प्रवाचक, शिक्षा विभाग

शोधकर्ता
सैय्यद रिजवान अली
एम.एड. (आर.आई.ई.)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्)
श्यामला हिल्स, भोपाल

2

कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्यायें: एक अध्ययन

विद्यया ऽ मृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
D-282

बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल की
एम.एड. (आर.आई.ई.) उपाधि की
आंशिक संपूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघुशोध प्रबंध

2008-2009

मार्गदर्शक
डॉ. यू. लक्ष्मीनारायण
प्रवाचक, शिक्षा विभाग

शोधकर्ता
सैय्यद रिज़वान अली
एम.एड. (आर.आई.ई)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्)
श्यामला हिल्स, भोपाल

गुरू-शिष्य के

आत्मीय संबंधों

को

समर्पित

घोषणा–पत्र

मैं यह घोषणा करता हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध मेरा स्वयं का मूल कार्य हैं, इससे पूर्व यह कहीं अन्यत्र प्रस्तुत एवं प्रकाशित नहीं किया गया है ।

अपने विज्ञ निर्देशक के सुयोग्य पथ–प्रदर्शन में जिन स्त्रोतों से इस शोध कार्य की रचना में सहायता ली गई है, उनका उल्लेख संदर्भ ग्रंथ सूची में किया गया है ।

स्थान : भोपाल

दिनांक : 27/04/2009

शोधकर्ता

सैय्यद रिज़वान अली

एम.एड. (आर.आई.ई.) प्रशिक्षणार्थी

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

भोपाल

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है, कि सैय्यद रिज़वान अली क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी.) भोपाल में एम. एड. (आर आई ई) के नियमित छात्र हैं। इन्होंने बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल से शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध **"कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्यायें : एक अध्ययन"** मेरे मार्गदर्शन में पूर्ण किया है। यह शोध कार्य इनका मैलिक प्रयास है, जो पूर्व में इस आशय से विश्वविद्यालय में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय एम. एड. (आर आई ई) परीक्षा सन 2008–09 की आंशिक संपूर्ति हेतु प्रस्तुत है।

निर्देशक

स्थान : भोपाल

डॉ.यू.लक्ष्मीनारायण

दिनांक : 27/04/2009

प्रवाचक, शिक्षा विभाग (N.C.E.R.T.)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल (मध्यप्रदेश)

आभार

सृजन के आत्मीय अनुबंध और स्वजनों के मधुर संबंध से रचे इस प्रयास हेतु मैं उन सभी मर्मज्ञ तथा विशेषज्ञों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिनके ज्ञान, अनुभव और सतत मार्गदर्शन से इस रचना को आकार मिला है।

सर्वप्रथम मैं क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के प्राचार्य डॉ. ए.बी. सक्सेना जी का आभारी हूँ कि उन्होनें इस संस्थान से एम.एड. की उपाधि प्राप्त करने की अनुमति प्रदान की।

मैं शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.के. गोयल सर का आभारी हूँ कि उन्होनें प्रत्येक क्षण प्रेरणास्त्रोत बनकर अपना विद्वतापूर्ण निर्देशन प्रदान किया।

मैं अपने मार्गदर्शक डॉ. यू. लक्ष्मीनारायण सर का हृदय से आभारी हूँ कि उन्होनें अपने संरक्षण में मुझे कार्य करने का अवसर प्रदान किया। इनके विशुद्ध विषय ज्ञान व विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन का परिणाम ही यह लघुशोध प्रबंध है।

आदरणीय डॉ. एस.के. गुप्ता सर के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ कि उन्होनें मुझे मानसिक संबल प्रदान किया जिससे समय की कमी और कार्य के दबाव के बावजूद मैं खुद को तनाव रहित रख सकता हूँ।

परम आदरणीय ''डॉ. के.के. खरे सर'' का मैं ऋणी रहूँगा। उनके अत्यंत व्यस्त रहने के बावजूद मैं निःसंकोच मार्गदर्शन हेतु उनके पास गया और उन्होनें पूरे मनोयोग के साथ मेरी समस्या का समाधान किया।

मैं आभारी हूँ अपने गुरूजन डॉ. एम.यू. पाइली, डॉ. बी. रमेश बाबू, डॉ. रत्नमाला आर्य, श्री संजय कुमार पंडागले तथा अन्य सभी गुरूजनों का जिन्होनें हमेशा मुझे ज्ञान का मार्ग दिखाया।

मैं ग्रंथालय प्रभारी श्री पी.के. त्रिपाठी तथा संस्था के अन्य सभी कर्मचारियों का आभारी हूँ क्योंकि उन्होनें हर संभव मेरी सहायता की।

श्री आर.एम.दास, शिक्षक (शासकीय बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, राजनांदगांव) को मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होनें

परीक्षा–मूल्यांकन कार्य की व्यस्तता के बावजूद मुझे विषयगत–सामग्री एकत्र करने में सहायता प्रदान की। उनकी ऊर्जा से मैं हमेशा प्रेरित होता रहूँगा।

मैं उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के व्याख्याता श्री अरूण कुमार पोद्दार जी को हृदय से धन्यवाद अर्पित करता हूँ क्योंकि उनका स्नेह भरा मार्गदर्शन हमेशा मुझे मिला है।

मैं अपने पिता श्री एस.ए.अली एवं माता श्रीमती के.एफ. अली का आभारी हूँ कि उन्होनें कदम–कदम पर मेरा हौसला बढ़ाया है। मैं अपनी माता का विशेष आभारी हूँ क्योंकि उनकी ही दुआओं का असर है कि आज मैं इस स्थान तक पहुँचा हूँ।

मैं श्री दशरथ सिंह राजपूत जी (राजपूत फोटोकापी, न्यू मार्केट, भोपाल) तथा श्री लक्ष्मीनारायण जी (अविराज कम्प्यूटर्स, राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़) के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ कि उनहोनें अत्यंत आत्मीयता से मेरे इस कार्य को अंजाम दिया है।

मैं उन समस्त विद्यालयों (प्रदत्त संग्रहण) के प्राचार्यो, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को भी उनके प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष सहयोग के लिए धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

अंत में मैं सभी गुरूजनों के प्रति अपने आभार को कुछ इन शब्दों में व्यक्त करता हूँ –

मेरे आदरणीय गुरूवर,
साफ–सुथरी सड़क पर आप,
छोड़ दिये हैं चल, कुछ पद चिन्ह
उनका अनुसरण करते हुये, जाना है मुझे भवसागर पार

है समर्पित उन्हें साधना मेरी,
जो है मेरी विद्या के संबल और आधार

शोधकर्ता

स्थान– भोपाल
दिनांक– 27/04/2009

सैय्यद रिज़वान अली
एम.एड. (आर.आई.ई.) प्रशिक्षणार्थी
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भोपाल

प्राक्कथन

हर किसी अवचेतन मन में ज्ञान के प्रति रूचि तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति क्षमता विकसित करने में शिक्षण विद्या की महती भूमिका होती है। शिक्षण के विभिन्न चरणों में ज्ञान की विभिन्नताओं का यथा स्थान समावेश नितांत आवश्यक होता है।

अनुशासन सुशासन की निरंतरता को बनाये रखने वाला परमावश्यक तत्व है। व्यवहार में वांहित परिवर्तन लाने हेतु तथा व्यक्ति विशेष की दक्षताओं एवं प्रवीणताओं में निखार लाने अनुशासन की परिसीमा निर्धारित की जाती है जिसे लांधने में जीवन कष्टपरक तो होता ही है, अपितु अबूझ विषमताओं के जाल में तब्दील हो जाता है, अनुशासनहीनता के संभावित खतरों के प्रति आगाह करने हेतु मेरा यह प्रयास संभवतः भोर में एक नये सूर्य का आलोक प्रदान करने की क्षमता से युक्त है।

अनुशासन का उद्देश्य बालकों में आत्मनियत्रंण एवं आत्म–अनुशासन के गुणों की उत्पत्ति करके उन्हें एक सफलीभूत जीवन व्यतीत करने में मद्द करना होता है। कक्षा में अनुशासन से तात्पर्य, कक्षा में व्यवहार संबंधी समस्याओं से रूबरू होना एवं उनका निराकरण करना है।

बी.एड. प्रशिक्षणार्थी के रूप में इन्टर्नशिप कार्यक्रम के तहत शासकीय माध्यमिक विद्यालय, बिलासपुर (छत्तसीगढ़) में जाने से मैनें प्रत्यक्ष रूप से इस समस्या का सामना किया। तभी से मैनें कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं के विषय अध्ययन का सोच लिया था। कुछ लोगों का मत है की कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं के कोई मायने नहीं है, बच्चे हैं तो ऐसी गलतियाँ करेगें ही। ये बात अपनी जगह सही है

परन्तु अनुशासन के माध्यम से बच्चों को यह बताना भी हमारा कर्तव्य है कि वे खेल के मैदान जैसा व्यवहार कक्षा में नहीं कर सकते।

मैं यह तो नहीं कह सकता कि मेरा यह प्रयास सार्थक है, परन्तु यह अवश्य कह सकता हूँ कि इस किन्चित कोशिश के बाद शिक्षा जगत से जुड़े लोगों का ध्यान जरूर इस समस्या के प्रति आकृष्ट होगा और अपने–अपने स्तर पर इस समस्या को नियंत्रित करने की दिशा में सभी के प्रयास अवश्य फलीभूत होगें।

शोधकर्ता

सैय्यद रिज़वान अली
एम.एड. (आर.आई.ई.) प्रशिक्षणार्थी
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भोपाल

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या
प्रथम	परिचय	1–14
	1.1 प्रस्तावना	
	1.2 अध्ययन की आवश्यकता	
	1.3 अध्ययन के उद्देश्य	
	1.4 शोध प्रश्न	
	1.5 शोध का परिसीमन	
द्वितीय	संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन	15–24
	2.1 भूमिका	
	2.2 पूर्व शोध कार्य का आकलन	
तृतीय	शोध की प्रविधि एवं प्रक्रिया	25–27
	3.1 शोध अभिकल्प	
	3.2 जनसंख्या	
	3.3 न्यादर्श का चयन	
	3.4 प्रयुक्त उपकरण	
	3.5 प्रदत्तों का संग्रहण	
	3.6 प्रदत्तो का विषलेशण	
चतुर्थ	आँकड़ो का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या	28–53
	➢ शिक्षकों द्वारा एकत्रित आँकडो का विश्लेषण एवं व्याख्या	
	➢ विद्यार्थियों द्वारा एकत्रित आँकडो का विश्लेषण एवं व्याख्या	
	➢ प्राचार्यों द्वारा एकत्रित जानकारियों से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण	
	➢ अभिभावकों से एकत्रित उपयोगी तथ्य	
पंचम	सांराश, निष्कर्ष एवं सुझाव	54–63
	5.1 सांराश	
	5.2 समस्या कथन	
	5.3 शोध प्रश्न	
	5.4 न्यादर्श का चयन	
	5.5 शोध के निष्कर्ष	
	5.6 सुझाव	
	5.7 भावी अनुसंधान हेतु सुझाव	
	➢ संदर्भ ग्रंथ सूची	64
	➢ परिशिष्ट	

तालिका सूची

कमांक	तालिका कमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	4.1	शिक्षकों की विद्यार्थियों से कक्षा में किये जाने वाले व्यवहार की अपेक्षा	28
2.	4.2	कक्षा–वातावरण का शिक्षक के लिए अनुकूल न होने का कारण	28
3.	4.3	शिक्षक की प्रतिक्रिया	29
4.	4.4	गृह–कार्य देने के प्रति शिक्षक का उद्देश्य	30
5.	4.5	गृह–कार्य को जमा करने पर शिक्षक का कार्य	30
6.	4.6	गृह–कार्य के मूल्यांकन विषयक चर्चा	31
7.	4.7	शिक्षक –छात्रों का अनुपात	32
8.	4.8	विद्यार्थियों की अधिक संख्या से होने वाली दिक्कतें	32
9.	4.9	शिक्षक द्वारा बड़ी कक्षा के कारण उत्पन्न समस्याओं का निराकरण	33
10.	4.10	कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्यायें	34
11.	4.11	शिक्षक की दृष्टि में विद्यार्थियों के अनुशासित रहने के कारण	34
12.	4.12	विद्यार्थियों की कक्षा में बैठने के पश्चात् मनः स्थिति	35
13.	4.13	कक्षा में अशांति की अधिकता	36
14.	4.14	विद्यार्थियों के माता–पिता का शैक्षिक स्तर	36
15.	4.15	विद्यार्थियों की दृष्टि में गृह–कार्य की उपयोगिता	37
16.	4.16	विद्यार्थी द्वारा गृह–कार्य नहीं करने के कारण	37
17.	4.17	अध्यापन समझ नहीं आने पर विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक से पूछना	38
18.	4.18	विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक से न पूछने के कारण	38
19.	4.19	अध्यापन समझ नहीं आने के बाद विद्यार्थियों की मनःस्थिति	39

20.	4.20	शिक्षक द्वारा गृह–कार्य का मूल्यांकन	39
21.	4.21	विद्यार्थियों के साथ शिक्षक के व्यवहार की एकरूपता	40
22.	4.22	शिक्षक की अपेक्षा के अनुरूप विद्यार्थियों द्वारा अनुशासितनहीं रहने के कारण	40
23.	4.23	प्राचार्यो (पांच विद्यालयों के प्राचार्य) द्वारा साक्षात्कार–अनुसूची के माध्यम से एकत्रित जानकारियों से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण	41
24.	4.24	अभिभावकों (माता–पिता) से समूह–चर्चा के पश्चात् उपयोगी तथ्य	42
25.	4.25	गृह कार्य में अनियमितता–कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्या का कारण	44
26.	4.26	गृह कार्य की गुणवत्ता–कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्या का कारण	45
27.	4.27	गृह कार्य के मूल्यांकन में पादर्शिता–अनुशासन संबंधी समस्या का कारण	46
28.	4.28	छात्र संख्या की अधिकता–कक्षा प्रबंधन एवं अनुशासन संबंधी समस्या का कारण	47
29.	4.29	कक्षा में उत्पन्न समस्याओं का शिक्षकों द्वारा निराकरण	48
30.	4.30	छात्रों की शैक्षिक पृष्ठभूमि–कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्या का कारण	50
31.	4.31	विद्यालयीन प्रशासन का कक्षा को अनुशासित रखने संबंधी प्रयास	51
32.	4.32	विद्यालयीन प्रशासन का अनुशासन संबंधी समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण	52